Subject :- Sociology Date :- 18/05/2020 (1)
Class :- D-II (H) Paper :- 4th
Topic :- निदर्शन के महत्व, इसके गुण एवं दोष
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga

निदर्शन प्रणाली के महत्व

Online Study Material No :- (81)

सामाजिक अनुसंधान में निदर्शन के महत्व :-

1. **समय, धन और श्रम की बचत :-** किसी भी सम्पूर्ण सामग्री का अध्ययन करने में अधिक श्रम, अधिक समय और अधिक धन की आवश्यकता होती है। भौतिक अथवा सामाजिक अनुसंधान दोनो के लिए यह सत्य है। सामाजिक सर्वेक्षण में यदि एक समाज की प्रत्येक इकाईयों का अध्ययन करते हैं तो समय अधिक लगेगा और अधिक कार्यकर्त्ताओं को पारिश्रमिक देना पड़ेगा। उदाहरणार्थ - यदि हम कलकत्ता में बेरोजगारी का सर्वेक्षण करना चाहता है तो हमारे इकाईयों के चुनाव के लिए दो रास्ते हैं। या तो हम सभी बेरोजगारों का सर्वेक्षण या विभिन्न वर्गों के बेरोजगारों में से प्रति न्यादर्श/निदर्शन ले और उन्ही का सर्वेक्षण करें। दोनों प्रकार से हम समान साधारणीकरण पर ही पहुँचेगे, अन्तर सिर्फ यही है कि पहली पद्धति के द्वारा कम समय में, कम खर्च के द्वारा और कम श्रम से आवश्यक सूचनाएँ एकत्र कर सकेंगे।

2. **विस्तृत समस्याओं और क्षेत्रों का गहन अध्ययन :-** सम्पूर्ण क्षेत्र में सर्वेक्षण में हम किसी भी समस्या अथवा परिस्थिति का गहन अध्ययन नही कर सकते और यह संभव नही है। संगणना को हम गहन अध्ययन नही कह सकते। यह तो मात्र सूचनाओं का संकलन है। सम्पूर्ण के सर्वेक्षण के लिए हमारा ध्यान विस्तृत क्षेत्रों में बँटा रहता है और हमारा सर्वेक्षण एक विहंगम अवलोकन मात्र हो जाता है। इसके विपरित जब हम किसी समग्र का निदर्शन निकालते हैं तो हमारा कार्य-क्षेत्र सीमित हो जाता है। निदर्शन की प्रत्येक इकाई का सर्वेक्षण में हमें विशेष समय मिल जाता है। उदाहरणार्थ - यदि किसी सामाजिक परिस्थिति या समस्या के सर्वेक्षण के लिए हमें तीस दिनो की अवधि मिली हो तो तीस हजार व्यक्तियों के सर्वेक्षण के लिए समय का विभाजन उसी अनुपात में करना होगा। यदि तीस हजार व्यक्तियों का न्यादर्श तीन हजार व्यक्तियों में सीमित कर दिया जाए तो प्रतिदिन के हिसाब से हमें केवल सौ व्यक्तियों का सर्वेक्षण करना होगा। समग्र का न्यादर्श द्वारा कम कर हम उसी निश्चित अवधि में व्यक्तियों का अधिक गहनतर अध्ययन कर सकते हैं।

3. **प्राप्त आँकड़ो की परीक्षा :-** निदर्शन पद्धति के द्वारा अनुसंधान क्रम में

Ajanta Oxford

प्राप्त हुयी सूचनाओं की परीक्षा करने की सुविधा होती है। किसी भी सर्वेक्षण में एकत्र किये गये आँकड़ों का पुनः परीक्षण आवश्यक होता है। लेकिन यदि हम उन सभी व्यक्तियों को पुनः परीक्षण में सम्मिलित करें जिन्हे सर्वेक्षण के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया था, तो इसे सर्वेक्षण की पुनरावृत्ति कहेंगे। उदाहरणार्थ - सर्वेक्षण के दौरान यदि हमने तीन हजार व्यक्तियों अथवा उत्तरदाताओं से आँकड़े एकत्र किये हैं, तो आँकड़ों की सत्यता की परीक्षा भी हम उन तीन हजार व्यक्तियों में से केवल कुछ व्यक्तियों को ही हम न्यादर्श पद्धति द्वारा चुन लेते हैं और आँकड़ों की पुनः परीक्षण में निदर्शन पद्धति का उपयोग आवश्यक और अनिवार्य होता है।

4. **सीमित परिस्थितियों में विशद् अध्ययन** :- भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में निदर्शन की इस उपयोगिता को अधिक स्पष्टतया पाते हैं। अनुसंधानकर्ता अपने प्रयोगशाला के सीमित वातावरण में, प्रकृति की चिरंतन प्रक्रियाओं के अध्ययन करता है। सम्पूर्ण प्रकृति को प्रयोगशाला के सीमित दायरे में लाना असंभव है। निदर्शन परीक्षण के अतिरिक्त उसके सामने और कोई रास्ता नही है। जब समाजशास्त्री मानव समाज की चिन्तन प्रक्रियाओं का अध्ययन के लिए किसी विशेष भौगोलिक सीमा का चुनाव करता है तभी से निदर्शन प्रक्रिया शुरु हो जाती है। सम्पूर्ण मानव समाज को सर्वेक्षण की परिधि में लाना न संभव है और न ही तर्क-संगत ही इस प्रकार अनुसंधान की प्रकृति ही निदर्शन पर आधारित है।

निदर्शन प्रणाली के निम्नांकित गुण है :-

1. **समय की बचत** → इस प्रणाली में सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन न करके कुछ प्रतिनिधि इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। अतः समय कम लगता है। किसी-किसी अनुसंधान में समय का अत्यधिक महत्व होता है। जैसे आम चुनाव के पूर्व किसी उम्मीदवार की जीत या हार का चुनाव करना। यदि इस दिशा में सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन किया जाय तो अनुमान बाद में लगेगा और चुनाव के परिणाम पहले आ जाएंगे। अतः इस प्रकार के कार्यों में निदर्शन पद्धति ही सबसे अधिक उपयोगी होती है।
2. **धन की बचत** → निदर्शन पद्धति में केवल प्रतिनिधि इकाईयों का ही अध्ययन किया जाता है। अतः पद्धति गहन अध्ययन के लिए लाभकारी है। इसके साथ ही साथ इस पद्धति में धन की भी बचत होती है।

Scanned with CamScanner

3. अधिक गहन अध्ययन की संभावना → निदर्शन पद्धति में अध्ययन की इकाईयाँ कम होती है। अत: प्रत्येक इकाई का विस्तार के साथ अध्ययन किया जा सकता है। अत: यह पद्धति गहन अध्ययन के लिए आवश्यक है।

4. निष्कर्षों की परिशुद्धता → निदर्शन में अनुसंधानकर्त्ता का ध्यान कुछ विशेष इकाईयों पर केन्द्रित होता है। अत: वह प्रत्येक इकाई का गहन अध्ययन करता हुआ शुद्ध परिणामों को प्राप्त कर सकता है। यदि सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करे तो यह कभी संभव नही हो सकता कि इसके अध्ययन से वह शुद्ध परिणाम प्राप्त कर सके। इसी कारण निदर्शन जनगणना के परिणाम से अधिक शुद्ध होते है।

5. प्रशासनिक सुविधा → निदर्शन पद्धति में अनुसंधान कार्य को संगठित करने में विशेष सुविधा होती है। इसके दो प्रमुख कारण है (i) कार्य पर लगाये गये व्यक्ति कम होते है, अत: उनके कार्य की निगरानी सरलता से की जा सकती है (ii) सूचनाओं की संख्या कम होने से सूचना एकत्र करने का भार कम हो जाता है।

6. अन्य लाभ → (i) अनुसंधान का क्षेत्र बड़ा होता है (ii) गहन अध्ययन संभव हो पाता है।

निदर्शन प्रणाली के निम्नांकित दोष भी है :-

1. अभिमति की संभावना → निदर्शन प्रणाली का सबसे बड़ा दोष इसका अभिमतिपूर्ण होना है। यदि निदर्शन प्रतिनिधि नही है तो उसके परिणाम भ्रमपूर्ण होंगे।

2. प्रतिनिधित्व का अभाव → पूर्ण रूप से प्रतिनिधि निदर्शन का चुनाव बड़ा कठिन होता है।

3. विशेष ज्ञान की आवश्यकता → निदर्शन के चुनाव के लिए विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता होती है। प्रत्येक व्यक्ति निदर्शन का चुनाव नही कर सकता।

4. पक्षपात की संभावना → कुछ प्रतिनिधि व्यक्ति कुछ भावनाओं के प्रति पक्षपातपूर्ण होते है जिससे निष्कर्ष भ्रमपूर्ण हो जाता है।

5. निदर्शन की संभावना → यदि अध्ययन का विषय बहुत होता है तो प्रत्येक इकाई का अध्ययन करना आवश्यक है। अत: यहाँ अध्ययन निदर्शन द्वारा न करके जनगणना द्वारा करना उपयोगी होता है।

S. N. Choudhary
Marwari College
L. N. M. U

Scanned with CamScanner